

कमी, अभाव *वि.* सामान्य- सी बात पर रो पड़ने वाला।

रोप पुं. (तत्.) 1. ठहराव, रुकावट 2. छेद 3. बाण।

रोपक *वि.* (तत्.) 1. स्थापित करने वाला 2. रोपने वाला 3. पौधा आदि लगाने वाला पुं. 1. सोने चाँदी की तौल का एक मान।

रोपण पुं. (तत्.) 1. उठाने, लगाने या खड़ा करने की क्रिया 2. वृक्ष लगाने का कार्य 3. घाव भरने वाली दवा लगाने की क्रिया।

रोपना *स.क्रि.* (तद्.) 1. (पौधे आदि) लगाना, जमाना 2. पौधों आदि को एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर लगाना 2. पौधा या जमाना, लगाना या बोना, डालना।

रोपनी *स्त्री.* (तद्.) धान आदि के पौधों को रोपने का काम, रोपाई उदा. धान रोपनी का समय।

रोपित *वि.* (तत्.) 1. जिसको रोपा गया हो 2. स्थापित; लगाया हुआ।

रोब पुं. (अर.) 1. शक्तिशाली होने की ऐसी धाक कि विरोधी कुछ कर न सके 2. दबदबा 3. आतंक।

रोबदार *वि.* (फा.) 1. जिसका आसपास दबदबा हो, धाक वाला, रोबीला 2. प्रभावशाली।

रोबीला *वि.* (फा.) जिसकी आस पास धाक हो, रोबदार।

रोमंथन पुं. (तत्.) 1. खाए हुए को बार-बार चबाने का कार्य, जुगाली 2. जिसका अध्ययन किया गया हो तो उसके बारे में चिंतन-मनन करना।

रोम पुं. (अं.) इटली की राजधानी अथवा उसके आस-पास का इलाका।

रोम पुं. (तत्.) 1. शरीर की त्वचा के बहुत छोटे-छोटे मुलायम बाल, रोआँ, लोम, रोंगटे उदा. रोम-रोम में- सारे शरीर में, रोम-रोम में- शुद्ध और पूर्ण रूपेण 2. छेद अथवा सूराख 3. ऊन।

रोमक पुं. (तत्.) 1. साँभर झील का प्राकृतिक नमक, पांशुलवण 2. एक प्रकार का चुंबक 3. ज्योतिष का एक सिद्धांत।

रोमकूप पुं. (तत्.) त्वचा के वे अत्यन्त सूक्ष्मछिद्र जिनसे रोएँ निकलते हैं, रोम छिद्र।

रोमधर पुं. (तत्.) 1. जिसके शरीर पर अधिक बाल हों, बालों से भरपूर 2. जी.वि. एक विशेष प्रकार के शिकारी कीट के सिर के ऊपर पाया जाने वाला श्रेवणेंद्रिय का एक हिस्सा जिससे वह कीटों की तेज आवाजों की स्थिति का अनुमान लगाता है।

रोमन *वि.* (अं.) 1. रोम नगर अथवा राष्ट्र का 2. पुं. रोम का निवासी 3 *स्त्री.* वह लिपि जिसमें अंग्रेजी, रूसी आदि यूरोपीय लिपियाँ लिखी जाती हैं।

रोमपट पुं. (तत्.) बालों से बनाया गया वस्त्र, ऊनी वस्त्र, ऊनी कपड़ा।

रोमपाद पुं. (तत्.) त्रेता युग के एक प्रसिद्ध राजा जो सूर्यवंशी राजा दशरथ के घनिष्ठ मित्र थे।

रोमराजी *स्त्री.* (तत्.) पेट से नाभि तक रोओं की पंक्ति, रोमावलि, रोमलता।

रोमलता *स्त्री.* (तत्.) नाभि से ऊपर पेट तक रोमों की पंक्ति, रोमराजि, रोमावली।

रोमहर्ष पुं. (तत्.) किसी आनंद दायक समाचार को सुनकर रोमों में हलचल होना, पुलकित होने का भाव, रोम खड़े होना।

रोमांच पुं. (तत्.) 1. आनंद अथवा भय से शरीर के रोंगटों का खड़ा होना 2. पुलकित होने का भाव 3. साहित्य में हर्ष अथवा भय से होने वाला शारीरिक व्यापार, सात्विक अनुभाव।

रोमाली *स्त्री.* (तत्.) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर गई हो, रोम राजी, रोमावलि।

रोमिल *वि.* (तत्.) 1. जिसके शरीर पर अत्यधिक रोएँ हो, बालों से भरा हुआ 2. रोएँदार।